Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

M.H.D.-16

भारतीय उपन्यास

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ramvilas Gupt*

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

Content

भारतीय उपन्यास

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-3

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

चेम्मीन

1. तकषि शिवशंकर पिल्लै : व्यक्तित्व और कृतित्व 1
2. चेम्मीन : युग परिवेश 9
3. चेम्मीन : विषयवस्तु, कथानक एवं पात्रसृष्टि 19
4. चेम्मीन में कथन तंत्र : मिथ और भाषा का प्रयोग 32
5. 'चेम्मीन' का मूल्यांकन 39

संस्कार

6. अनन्तमूर्ति का लेखकीय परिवेश 49
7. 'संस्कार' की सामाजिक चेतना 61

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

8. 'संस्कार' की पात्र-योजना 69

9. 'संस्कार' : एक मूल्यांकन 79

मानवीनी भवाई

10. पन्नालाल पटेल का जीवन-परिचय और कृतित्व 86

11. पन्नालाल पटेल का युग-संदर्भ 95

12. 'मानवीनी भवाई' की कथावस्तु और विशेषताएँ 102

13. 'मानवीनी भवाई' का मूल्यांकन 112

14. पन्नालाल पटेल की रचनाशीलता 123

जंगल के दावेदार

15. महाश्वेता देवी : व्यक्तित्व और कृतित्व 132

16. बांगला उपन्यास साहित्य और महाश्वेता देवी 144

17. 'जंगल के दावेदार' : सामाजिक चेतना 163

18. कथानक एवं चरित्र 175

19. 'जंगल के दावेदार' : एक मूल्यांकन 186

■ ■

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारतीय उपन्यास

M.H.D.-16

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. 'चेम्मीन' के कथानक की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-31, प्रश्न 1

अथवा

तकषि शिवशंकर पिल्लै की जीवन दृष्टि का मूल्यांकन करते हुए 'चेम्मीन' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'जीवन दृष्टि'

प्रश्न 2. 'मानवीनी भवाई' की रचनात्मक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-109, प्रश्न 4

अथवा

'मानवीनी भवाई' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-112, 'प्रस्तावना'

प्रश्न 3. 'संस्कार' में निहित सामाजिक चेतना का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-80, 'सामाजिक विवेचन'

अथवा

'संस्कार' के केन्द्रीय पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-70, 'संस्कार का केन्द्रीय चरित्र'

प्रश्न 4. 'जंगल के दावेदार' के माध्यम से महाश्वेता देवी की जीवन दृष्टि का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-140, 'महाश्वेता देवी का कृतित्व और लेखन दृष्टि', अध्याय-16, पृष्ठ-157, प्रश्न 1

अथवा

'जंगल के दावेदार' उपन्यास की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-168, 'उपन्यास की पृष्ठभूमि'

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) धानी मुंडा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-18, पृष्ठ-179, 'धानी मुण्डा'

(ख) 'संस्कार' का उद्देश्य

उत्तर–डॉ. उड्डुपी राजगोपालाचार्य अनन्तमूर्ति लिखित उपन्यास 'संस्कार' सामाजिकता की सच्चाई के धरातल पर परम्परावादी कथा कहने वाला एक श्रेष्ठ उपन्यास है। इसकी मूल कथा अग्रहार के माधव के ब्राह्मणों और नारणप्पा के दाह-संस्कार पर आधारित है। इसके माध्यम से लेखक ने ब्राह्मण समाज, खासतौर से माधव-समाज की जीर्ण-शीर्ण मान्यताओं, चारित्रिक हीनता और अंधविश्वासों-ख्यालों पर सीधा व्यंग्य प्रहार किया है। इस प्रकार के मत-विचार कुछ मान्य और महान लेखकों, विचारकों और विद्वानों ने अलग-अलग ढंग से व्यक्त किए हैं। इस क्रम में राबर्ट जाइडेनबास, वी.एस. नैपॉल आदि के नाम लिए जा सकते हैं। रॉबर्ट जाइडेनबास के अनुसार 'संस्कार' की मूल कथा रूढ़िवादी है, जो त्रासद और चिन्तनीय है। यह हिन्दू धर्म की है या हिन्दू समाज की है। यह विचारणीय प्रश्न है। यह भी विचारणीय है कि इस उपन्यास में उल्लेखित लालच, फरेब, झूठ, ईर्ष्या, द्वेष, छल, नैतिक दोगलापन हिन्दू धर्म या समाज में ही है या और किसी धर्म या समाज में भी है। अगर हिन्दू धर्म या समाज में ही नहीं, अपितु अन्य धर्म या समाज में भी ये दोष और कमियाँ हैं, तो फिर यह सवाल उठता है कि इस तरह केवल हिन्दू धर्म या समाज पर ही लेखक ने जो कुठाराघात किया है, वह कितना सही और ठीक है। कुछ इसी प्रकार के सवालिया निशान नोबल पुरस्कार विजेता सुप्रसिद्ध विचारक, चिन्तक और लेखक वी.एस. नैपॉल ने भी इस उपन्यास के अध्ययन-मनन के बाद लगाए हैं। उन्होंने 'संस्कार' के साथ-साथ महात्मा गाँधी की आत्मकथा पर भी सवालिया निशाना साधते हुए यह प्रयास किया है कि भारतीय मानस बाहरी संसार की सच्चाई का प्रयोग अपने मान-महत्त्व और स्वाभिमान की क्रमबद्धता के लिए करने में सदैव तत्पर रहता है।

'संस्कार' उपन्यास में हिन्दू धर्म की विद्रूपता का जो चित्रण हुआ है, वह भौतिक और अभौतिक दोनों ही धरातलों पर दिखाई देता है। चन्दरी के साथ प्राणेशाचार्य का संभोग और उससे उत्पन्न हुए

अस्थिर वेग भौतिक धरातल पर हैं, तो उनके सोच-विचार से बदली हुई विचारधारा अभौतिक धरातल पर हैं। इसी तरह के और भी उल्लेख किए जा सकते हैं, जिनसे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि उपन्यासकार ने प्रस्तुत उपन्यास 'संस्कार' में हिन्दू धर्म में संस्कार की व्यापकता को दिखाने के लिए भौतिक के साथ-साथ अभौतिक परिवर्तनों को समाहित किया है। उपन्यास के अंग्रेजी अनुवादक रामानुजन ने 'संस्कार' के इसी अर्थ की ओर दृष्टिकोण करते हुए कहा है कि रंगमंच ग्रामीण हिन्दू समुदाय से हटकर नायक के शरीर और आत्मा तक पहुँचा जाता है। प्रख्यात रचनाकार मधु प्राशर ने इस उपन्यास के हिन्दू धर्म के भौतिक और अभौतिक स्वरूपों पर अपनी दृष्टि डाली है।

समीक्षक का अपना मत है कि प्राणेशाचार्य द्वारा सामाजिक नियमों का उल्लंघन किए जाने के साथ ही आत्म-निरीक्षण और वैयक्तिकता की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया शुरू हो जाती है, जो उन्हें आधुनिक नायक की पंक्ति में लाकर खड़ा कर देती है। प्राचीन भारतीय साहित्य से निकले हुए इन मूल्यों, परिकल्पनाओं और प्रतिमानों को जोड़कर लेखक ने एक ऐसे आयाम को उभारा है, जिसमें नायक की मुक्ति की यह प्रक्रिया एक ओर तो प्राचीन प्रतिमानों एवं परिकल्पनाओं और दूसरी ओर व्यक्तिवाद की आधुनिक परिकल्पना का मेल बन जाता है।

(ग) पन्नालाल पटेल के जीवन के प्रेरक प्रसंग

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-88, 'प्रेरक प्रसंग'

(घ) मलयालम उपन्यास लेखन की परंपरा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-17, प्रश्न 1

■■

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

भारतीय उपन्यास

चेम्मीन

तकषि शिवशंकर पिल्लै : व्यक्तित्व और कृतित्व | 1

प्रस्तावना

इस खण्ड में आधुनिक मलयालम साहित्य के उल्लेखनीय रचनाकार तकषि शिवशंकर पिल्लै द्वारा लिखित उपन्यास चेम्मीन (मछुआरे) के साथ-साथ उनके जीवनवृत्त पर भी प्रकाश डाला गया है। इस खण्ड की इस पहली इकाई में इस तथ्य को सबसे पहले लाने का प्रयास किया गया है कि तकषि शिवशंकर पिल्लै के जीवन का शुरुआती दौर किन-किन परिस्थितियों से होकर गुजरा। उससे उनका साहित्य कर्म किस तरह प्रभावित होकर सामने आने लगा। इस इकाई में 'किसी भी रचनाकार के जीवनवृत्त की जानकारी के उपरान्त ही उसकी रचनाओं का अध्ययन-मनन सुगम होता है' इसे ध्यान में रखकर तकषि शिवशंकर पिल्लै के जीवन और कृतित्व को रेखांकित किया गया है, इस दृष्टि से यहाँ सबसे पहले तकषि शिवशंकर पिल्लै के जीवन-स्वरूप पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

तकषि : जीवनवृत्त : परिचय

केरल राज्य की राजधानी तिरुवनन्तपुरम् से उत्तर दिशा की ओर लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर दूर तकषि नामक गाँव में तकषि शिवशंकर पिल्लै का जन्म 17 अप्रैल 1912 को हुआ था। तकषि गाँव मध्य केरल राज्य के अम्पलप्पुषा नामक जिलान्तर्गत है। यह इस जिले के अम्पलप्पुषा तालुक में है, जो समुद्र तट पर है। इसी गाँव के नाम के आधार पर अधिकांश लोग शिवशंकर पिल्लै को 'तकषि' कहकर पुकारते हैं। यों तो 'के.के. शिवशंकर पिल्लै' तकषि शिवशंकर पिल्लै का वास्तविक नाम है, फिर भी साहित्य जगत में वे तकषि शिवशंकर पिल्लै के नाम से ही सुप्रसिद्ध हैं। तकषि की माता पार्वती अम्मा और पिता पोरपल्लि कलत्तिल शंकर कुरूप धार्मिक प्रवृत्ति के थे। फलस्वरूप वे प्राय: अपने घर में पुराण पारायण और पुराण कथा-वार्ता का आयोजन किया करते थे। तकषि की पारिवारिक दशा बहुत अच्छी नहीं थी। उनके पिता किसान होने के साथ-साथ कथकली और तुल्लन कलाओं के कलाकार व जानकार थे।

आरंभिक शिक्षा के बाद तकषि की सातवीं कक्षा तक शिक्षा मछुवारी से जीविका चलाने वाले अरय समुदाय के बीच गाँव से लगभग बारह किलोमीटर दूर समुद्रतटीय अम्पलप्पुषा स्कूल में हुई। स्कूल में दोपहर का भोजन केले के पत्ते पर किया जाता था, जिसकी पोटली पर चींटियों की भरमार होती थी। जब स्कूल के छात्र चींटियों की भरमार वाले हिस्से को फेंककर भोजन करते थे, तब उन हिस्सों को अरयों के बच्चे अपनी बेबस गरीबी के कारण चींटियों सहित चावल खाकर अपनी भूख मिटाने का प्रयत्न करते थे। गरीबी की इस मार के कारण कोई-कोई अरय बच्चा ही सातवीं कक्षा तक पहुँचने में सफल हो पाता। शेष बालक तो जीविका-निर्वाह के लिए अपनी-अपनी उम्र और योग्यतानुसार जाल खरीदकर मछली मारने, नाव खेने आदि में लग जाते थे। तकषि ने सातवीं कक्षा अम्पलप्पुषा स्कूल से उत्तीर्ण कर लेने के बाद वैक्कम और करुवाट्टा के स्कूलों से हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। अपनी शिक्षा के दौरान तकषि द्वारा अरय समुदाय से प्राप्त हुए अनुभव उनके

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उपन्यास 'चेम्मीन' में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद तकषि की पठन-पाठन और अध्ययन के प्रति अभिरुचि बढ़ती ही गयी। फलस्वरूप उन्होंने तिरुवनन्तपुरम् शुरू हो गया। उन्हें विश्वस्तरीय लोकप्रियता उनके 'चेम्मीन' पर फिल्म बनने और फिर उसे सन् 1964 में मलयालम फिल्म का प्रथम 'स्वर्ण मयूर' राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किये जाने पर प्राप्त हुई। यहाँ यह उल्लेख कर देना प्रासंगिक होगा कि उपर्युक्त फिल्म के संगीत निर्देशक सलिल चौधरी और पार्श्व गायक साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में भौगोलिक प्रकृति और उससे सम्बन्धित जीवनचर्याएँ, पारिवारिक परिवेश और उसकी गतिविधियाँ, दार्शनिक प्रभावों, साहित्यिक सम्पर्कों, अनुभवों, अध्ययन आदि का विशेष योगदान रहा है। हम देखते हैं कि उनकी रचनाओं में केरल राज्य के भौगोलिक स्वरूप शहर, शहरप्रान्तर, ग्रामप्रान्तर, लघुग्राम,

लघुशहर, पहाड़ी क्षेत्र, सागर तटीय स्वरूप कुट्टनाड आदि अनेक प्रकार के पारिस्थितिक आकर्षणों-विशेषताओं की झलक दिखाई देती है। कुट्टनाड की यह बहुत बड़ी विशेषता है कि वह पूरे साल भर पानी में डूबा रहता है। उसमें फैली हुई आबादी एक टापू के उनका पठन-पाठन के प्रति लगाव कम होता गया। फलस्वरूप वे है इसलिए लोगबाग मंच बनाकर रहते हैं और मंच से उतरने पर आरंभ कोच्ची में आयोजित प्रथम समस्त केरल साहित्य परिषद् में ज्ञानपीठ सम्मानित जी. शंकर कुरूप के साथ-साथ अन्य कवियों-लेखकों से सम्पर्क करने के बाद हुआ। कुछ समय बाद उन्होंने करुवाट्टा के एन.एस.एस. हाई स्कूल से ही एस.एस.एल. सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

तेईस वर्ष की आयु में तकषि का विवाह नेटुमुटि गाँव की तेक्केमुरी निवासी चेंपकशेरी चिखकल कमलाक्षि अम्मा नामक लड़की से हुआ, जिससे चार लड़कियाँ और एक लड़का उत्पन्न हुए। अपनी विपन्नता से सम्पन्नता की ओर आने का कारण मानते हुए तकषि अपनी पत्नी को बड़े प्रेमपूर्वक 'कात्ता' कहकर पुकारते थे। इस समय वे धनाभाव के दौर से इस प्रकार गुजर रहे थे कि इतने बड़े परिवार के भरण-पोषण के लिए उनके पास अट्ठाईस सेर की ही कृषिवृत्ति थी। जब वे सन् 1939 में म्यूनिसिपल कोर्ट के वकील बने, तब उनकी आर्थिक दशा में धीरे-धीरे सुधार आने लगा। सन् 1950 में वे अनाथ हो गए। इससे उनकी पारिवारिक और आर्थिक दशा एक बार फिर लड़खड़ा गई। उनकी आर्थिक स्थिति में अपेक्षित सुधार तो उनके द्वारा लिखित उपन्यास 'रॅंडिडंगषि' के प्रकाशित होकर पाठ्य-पुस्तक बनने उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'चेम्मीन' के संसार की अधिकांश भाषाओं में रूपान्तरित होते ही में कानूनी पढ़ाई पूरी करने के लिए प्रवेश लेकर 'प्लीडर' की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। फिर वहीं पर उनका रुझान पत्रकारिता की ओर हुआ। इस दौरान उनका सम्पर्क जाने-माने पत्रकार और 'केसरी पत्र' के सम्पादक ए. बालकृष्ण पिल्लै से हुआ। उनकी साहित्यिक संकल्पनाओं और वर्णन नीति से सम्बन्धित अनुभवों की मन्नाडे थे।

यह उल्लेखनीय है कि तकषि ने अपने लेखन की शुरुआत अपने छात्र-जीवन से ही कहानीकार के रूप में की थी। उस समय वे के.के. शिवशंकर पिल्लै नाम से लिखते थे, लेकिन बाद में तकषि शिवशंकर पिल्लै नाम से लेखन कार्य करने लगे। उनकी पहली कहानी 'साधुक्कल' अर्थात् 'बेचारे लोग' नायर सर्विस सोसायटी की पत्रिका 'सर्विस' में प्रकाशित हुई थी। अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के कारण तकषि को समय-समय पर एक से एक बढ़कर पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस क्रम में उन्हें 'चेम्मीन' उपन्यास के लिए सन् 1957 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 'एणिप्पडिकल' उपन्यास के लिए सन् 1965 में केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार और सन् 1974 में सोवियत लैंड नेहरू एवार्ड, और 'कयर' उपन्यास के लिए सन् 1980 में वयलार पुरस्कार प्रदान किए गए। केरल विश्वविद्यालय और महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत किया, तो सन् 1985 में 'पद्म भूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 10 अप्रैल, 1990 में तकषि का निधन हो गया। उनकी स्मृति में उनका घर 'शंकरमंगलम्' 'तकषि संग्रहालय' के नाम से लोकप्रिय हो गया।

साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण

किसी भी रचनाकार-साहित्यकार के रचनात्मक-साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में उसके आसपास के वातावरण का बहुत बड़ा योगदान होता है। तकषि का साहित्यिक व्यक्तित्व इसका अपवाद नहीं है। तकषि के साहित्यिक व्यक्तित्व पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके साहित्य में उनके आसपास के वातावरण का सजगतापूर्वक चित्रण हुआ है। इस प्रकार उनके सराहना करते हुए उन्होंने अपनी आत्मकथात्मक रचना 'ओर्मयुटे तीरड्ड़लिल' (स्मृति के तटों पर) में उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की है। इससे केसरी बालकृष्ण पिल्लै के उस सम्पादक-व्यक्तित्व पर रोशनी पड़ती है, जिससे मलयाली साहित्यकारों को पश्चिमी साहित्यिक स्वरूपों से अवगत होने में अधिक सुविधा प्राप्त हुई। तकषि का प्रकृति-प्रेम बचपन से ही निरंतर बढ़ता गया। प्रकृति की सुन्दरता को बार-बार निहारने के साथ-साथ प्रकृति का अभिन्न स्वरूप, मनुष्य की जीवनचर्या के प्रति भी वे चिन्तनशील रहे। इस तरह वे एक घुमक्कड़ प्रवृत्ति के छात्र हो गए। इससे समान दूर से दिखाई देती है। चूंकि घर के अंदर भी पानी भरा रहता नवीं कक्षा उत्तीर्ण नहीं कर सके। उनके साहित्यिक अनुभव का

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इधर-उधर जाने का एकमात्र साधन एक ऐसी नाव हर घर में होती है, जिसे कोई भी बच्चा चला सकता है। नाव से ही खाने-पीने की चीजें लायी जाती हैं। बहुत पहले चक्की चलाकर, फिर बाद में पम्प के द्वारा खेतों से पानी निकालकर खेती का काम शुरू किया जाता है। इसके बाद लकड़ियों-झाड़ियों की सीमाएँ बाँध-बाँधकर अलग-अलग खेत तैयार किए जाते हैं। खेतों की तैयारी कर लेने के बाद बीज बोया जाता है। बीज जब पौधों का रूप ले लेते हैं, तब उनको खेतों में रोपने का काम शुरू हो जाता है।

तकषि के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में जो महत्त्वपूर्ण योगदान रहा उसमें उनके व्यक्तिगत सम्बन्ध, पारिवारिक सम्बन्ध, पारिवारिक पृष्ठभूमि, अनेक प्रकार की आकर्षक, रोचक और अद्‌भुत घटनाएँ; जैसे–विभिन्न प्रकार के मिथक, कृषि-अनुभव, वर्षा और जल-प्लावन की व्यथा, परिवार के बुजुर्गों द्वारा बचपन में सुनी हुई कुटट्नाड की कथा-कहानी आदि उल्लेखनीय हैं। तकषि की अधिकांश कहानियों में उनके बचपन के अनुभव, सुनी हुई कुट्टनाड की कथाओं की झलक देखी जा सकती है। इससे उनकी लेखन-शक्ति को कितना बल मिला है, यह स्पष्ट हो जाता है। उनके द्वारा सुनी गई 'काबुलीवाला' कहानी का उल्लेख इस संदर्भ में किया जा सकता है। उनकी लेखकीय दशा पर दृष्टि डालने से यह तथ्य सामने आता है कि उनके लेखन में उनकी निरीक्षण शक्ति का पुरजोर प्रवेश है। उसमें मेहनतकश मजदूरों, ताड़ी पीकर मदमस्त रहने वाले निठल्लों और परस्पर उपद्रव-हिंसा करने वालों के अंदर की पीड़ा-अभाव को बड़ी गहराई से उतारा गया है। मृत्य जीवन का सबसे दुख मृत्यु को मानकर उन्होंने सभी घटनाओं को मृत्यु से जोड़कर देखने की दृष्टि अपनायी है।

उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में विश्वस्तरीय पश्चिमी लेखकों, जैसे मोपाँसा, हेमिंग्वे, चेखव, इब्सन आदि के विषय में अधिक जानकारी रखने का उनका प्रयास कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। उनका यह प्रयास सन् 1930 से 1934 तक तत्कालीन लोकप्रिय पत्रिका 'केसरी' के कार्यालय में अनेक प्रकार की साहित्यिक गतिविधियों के सम्पर्क में आने से अधिक हो गया था। इसी क्रम में उन्होंने प्रगतिशील साहित्य का गंभीरतापूर्वक अध्ययन-मनन करते हुए मार्क्सवादी दृष्टिकोण के प्रति भी अपना झुकाव जारी रखा। तकषि बचपन से मानवता के हिमायती थे। उनका विरोध सुविधाभोगियों से और सहानुभूति अभावग्रस्त लोगों से थी। उनके द्वारा किया गया अंतर्मन के अव्यक्त भावों का चित्रण फ्रायड से और अंधविश्वासों पर आधारित जन्म-जन्मान्तर संबंधित मान्यताओं का खंडन डार्विन से प्रभावित है।

हम देखते हैं कि तकषि के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में उनकी निजी अनुभूतियों के योगदान के साथ-साथ उनके विविध सम्पर्कों, अध्ययनों, ज्ञानार्जनों, दार्शनिक दृष्टिकोणों और उनके आसपास के जीवंत माहौल का भी विशेष योगदान रहा है। इनसे निर्मित होने वाली रचनाएँ इसकी साक्षी हैं। इस विषय में उनका यह अभिमत यहाँ उल्लेखनीय है–

"मुझे संतोष है कि इस सम्पूर्ण अवधि में मैं ग्रामीणजन, आम आदमी तथा शोषित कामगार के साथ रहा हूँ। मैं उनके सुख एवं दुख में भागीदार रहा हूँ। मैंने उनकी आशाओं को दुलारा है एवं उनकी चिन्ताओं में हिस्सेदारी की है। जब कभी मैंने उन्हें चिन्तित पाया, मै चिन्तित हुआ, संकट की घड़ी में उत्कर्ष के शिखर पर चढ़ने के लिए मैं उनके साथ था। मैं उनके साथ आनंदित हुआ और रोया भी, मैं विवादग्रस्त एवं उदास था मगर मैंने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा।"

तकषि सुविधाओं और सुविधाभोगियों के प्रति अपना दृष्टिकोण इस प्रकार रखते हैं–

"ये भवन, बंगले तथा प्रासाद जीवन के अभिन्न अंग हैं। ये उपलब्धियाँ हैं। मैंने उन्हें अपने जीवन में छोड़ दिया है। वहाँ मनुष्य रहते हैं। उनकी भी आशाएँ, निराशाएँ, व्यथाएँ, चिंताएँ, हर्ष तथा नियति के उतार-चढ़ाव हैं, जिन पर उन्हें पार पाना होता है।" (पृष्ठ–303)

उपर्युक्त तथ्यों के समावेश से तकषि का निर्मित हुआ साहित्यिक व्यक्तित्व मलयालम साहित्य के द्वारा विश्व के श्रेष्ठ साहित्य में अपनी अलग पहचान कायम करने में सक्षम सिद्ध हुआ है।

मलयालम में कथा-साहित्य

मलयालम कथा-साहित्य के अध्ययन-मनन के उपरांत निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि मलयालम कथा-साहित्य भी सभी भारतीय भाषाओं की तरह पाश्चात्य उपन्यास से बहुत हद तक प्रभावित है। उदाहरणस्वरूप हम मलयालम का सन् 1887 में अएयु नेटुंगाडी रचित 'कुन्दलता' की कथावस्तु शेक्सपियर की नाटक-रचना 'सिंबलिन' की कथावस्तु से मेल खाती हुई देखते हैं। इस प्रकार मलयालम कथाकारों चन्तुमेनन का लक्षणायुक्त पहला उपन्यास 'बीकन फील्ड' के हेन्टिटा टेंपिल और जेन ऑस्टिन के 'प्राइड एन्ड प्रजुडिस' से प्रेरित और प्रभावित होता हुआ दिखाई देता है तो सी.वी. रामनपिल्लै के 'मार्ताण्डवर्मा' नामक उपन्यास पर सर वाल्टर स्कॉट के 'ऐवानहो' के प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता।

मलयालम का आरंभिक कथा-साहित्य मौलिक और अनूदित दोनों ही रूपों में है। इसका मौलिक स्वरूप सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, हास्यात्मक, विनोदात्मक, जासूसी आदि से वैविध्यपूर्ण है। इसका अनूदित स्वरूप विश्वप्रसिद्ध कृतियों का है जिसमें मिशब्ले, अन्नाकरेनिना, युद्ध एवं शान्ति, अपराध और दंड, मिट्टी

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

की बढ़त, भली धरती, जीन क्रिस्टोफर, सान्धिला, मदाम बोवेरी, प्रेमी, कैरमासोव सहोदर आदि उल्लेखनीय हैं। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष की गतिविधियों और मार्क्सवाद से प्रभावित होकर मलयालम के कथा-साहित्य में संवेदनशीलता सामाजिकता और वैयक्तिक स्वतंत्रता के रूप अंकित होने लगी। इससे मलयालम कथाकारों में सामाजिक क्रांति की भावना जन-जागरण की ओर लग गई।

यह कहा जा चुका है कि पाश्चात्य साहित्य के अनुकरण से मलयालम में कथा-साहित्य का श्रीगणेश हुआ। इससे उपन्यास का शिल्प, लक्षण आदि भी प्रभावित हुए। उपन्यास-कला पर मलयालम में जो ग्रन्थ लिखे गये, वे भी कुछ हद तक पाश्चात्य ग्रन्थों से प्रभावित हैं, जैसे 'Aspects of Novel' नामक पुस्तक की सहायता से सन् 1930 में एम.पी. पोल ने 'नोवल साहित्यम्' पुस्तक लिखी। यह पुस्तक 'उपन्यास कला' पर लिखी गयी मलयालम भाषा-साहित्य की पहली पुस्तक कही जाती है। यह इसलिए कि इससे पहले विभिन्न प्रकार के पत्र-पत्रिकाओं में उपन्यास से सम्बन्धित आलोचना-समीक्षा के साथ-साथ आख्यायिका ही प्रकाशित होती थी। चूंकि एम.पी. पोल अंग्रेजी के अध्यापक होने के साथ-साथ उच्च कोटि के आलोचक-समीक्षक थे। अतएव उनके द्वारा दी गई उपन्यास की परिभाषा ई.एम. फास्टर से प्रभावित होने वे बावजूद आज भी अकाट्य और मान्य है। उनके अनुसार "उपन्यास वही गद्य ग्रन्थ है, जिसमें मानव के विकार-विचारों को प्रकाशित किया जाता है और संभाव्य कथानक का आख्यान कर काव्यानुभूति उत्पन्न कर देता है।" दूसरी ओर केसरी बालकृष्ण पिल्लै ने उपन्यास को समसामयिक चेतना का जीवंत चित्रण मानते हुए कहा है–"समसामयिक जीवन का चित्रण अथवा निरूपण ही उपन्यास है।"

कृतित्व

तकषि की रचनाएँ न केवल संख्या की दृष्टि से बहुत अधिक हैं, अपितु वैविध्य की दृष्टि से भी पीछे नहीं हैं। इस तथ्य की पुष्टि उनके लेखन के विभिन्न चरणों पर दृष्टि डालते हुए हम इस प्रकार करना चाहेंगे–

पहला चरण

तकषि के लेखन के तीन चरण हैं, जिनका उल्लेख हम पहला चरण, दूसरा चरण और तीसरा चरण के अन्तर्गत कर सकते हैं। उनके आरंभिक लेखन का दौर कहानी और उपन्यास लेखन का दौर है, जिस पर बंगला कहानियों के साथ पाश्चात्य कहानियों विशेष रूप से फ्रांसीसी कहानियों (मोपांसा,जोला, स्टीफन ज्वीग आदि की कहानियों) के प्रभाव देखे जा सकते हैं। जैसे उनकी सन् 1931 में 'केसरी' पत्रिका में प्रकाशित कहानी 'विवाह के दिन' 'बिन नाम और तारीख का एक पत्र' 'पिता कौन है' आदि। अपने लेखन के इस पहले दौर में वे कहानी लेखन के साथ-साथ उपन्यास लेखन में भी जुट गए। इस दौर में जहाँ उनकी 'बाढ़' कहानी अधिक लोकप्रिय हुई, वहीं उनके तीन उपन्यास 'प्रतिफलम्' 'पतित पंकजम' और 'परमार्थगल' भी क्रमशः सन् 1934, 35 और 36 में प्रकाशित होकर समादृत हुए। इनमें 'प्रतिफलम्' अधिक विवादग्रस्त सिद्ध हुआ। उनके इन तीनों उपन्यासों में निम्न मध्यवर्गीय नारी की विवशता भरी अनैतिकता का नग्न चित्रण हुआ है; जैसे 'प्रतिफलम्' और 'पतित पंकज' में किसी लड़की की वेश्यावृत्ति अपनाने की विवशता का चित्रण है तो 'परमार्थगल' में अवैध बच्चों को जन्म देने वाली किसी अबला का विवशतापूर्ण चित्रण है। इस प्रकार के चित्रण की सहजता और स्वाभाविकता के आधार पर वे मलयालम गद्य-लेखक के युग प्रवर्तक के रूप में समादृत हैं।

दूसरा चरण

तकषि के लेखन का दूसरा दौर पूर्वापेक्षा अधिक परिवर्तित और मौलिक कहा जा सकता है। इस विषय में किसी समालोचक का यह कथन समुचित लगता है–

"यह ठीक है कि बंगला के रूमानी और फ्रांसीसी के यौन प्रभाव को तकषि ने काफी पीछे छोड़ दिया और अब लेकिन साथ ही राजनीतिक प्रभाव के कारण लेखन में वैचारिक तत्त्व का बाहुल्य रहा, जिसने उसके कलात्मक पक्ष को काफी दबा दिया।"

इस प्रकार तकषि के दूसरे चरण का लेखन एक ऐसा यथार्थपूर्ण लेखन है, जिसमें आम आदमी की विषयवस्तु है। तीव्र गति से हो रहे सामाजिक परिवर्तन का दिग्दर्शन है। मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव है, तो सामाजिक शक्तियों की निर्ममता पर साहित्यिक हथौड़े की चोट है। कृषि जीवन की यथार्थपरक संवेदनशीलता का चित्रण है तो दलित वर्ग की स्वार्थान्धता पर कारारा व्यंग्य है। 'भंगी का बेटा' भंगियों के जीवन पर आधारित एक ऐसी यथार्थवादी कहानी है, जिसमें चुहल मुक्कु नामक एक भंगी अपने बेटे को नारकीय जीवन से उबारने के लिए भंगियों का एक संगठन बनाकर भंगियों के जीवन में सुधार लाने का प्रयास करता है। आन्दोलन से मिलती हुई सफलता स्वार्थ का शिकार हो जाती है और उसका बेटा स्कूल से बहिष्कृत कर दिए जाने पर भंगी होने के लिए विवश हो जाता है। तकषि का 'दो सेर धान' कृषि जीवन की यथार्थपरक संवेदनशीलता को चित्रांकित करने वाला मलयालम के उपन्यासों में उल्लेखनीय है।

तीसरा चरण

तकषि का लोकप्रसिद्ध उपन्यास 'चेम्मीन' सन् 1955 में प्रकाशित हुआ। इसी के साथ उनके लेखन के तीसरे दौर का आरंभ माना जाता है। इ स दौर में उनका वैचारिक पूर्वाग्रह नहीं, अपितु उनका सृजनात्मक आग्रह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

मलयालम उपन्यास शाखा को तकषि की देन

www.neerajbooks.com